Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास संवर्धन हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की उपादेयता

डा.भारती कौशल

सहायकाचार्या (अतिथि), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत।

सारांश – शिक्षा के बदलते परिदृश्यमेंजहाँशिक्षकों के द्वारास्व-व्यावसायिक संवर्धन हेतु अनेक उपागमों का अनुसरण किया जा रहा है वहाँ क्रियात्मक अनुसंधान परिस्थितिजन्यतात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु एक उभरते उपागम के रूप में सामने आ रहा है। क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जो न केवल शिक्षकों को व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने में समर्थ है अपितु इसकेद्वाराशिक्षक शिक्षण अधिगम के दौरान अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से समाधान करने का प्रयास करते हैं। यह शिक्षक को उसके द्वारा किए जाने वाली क्रियाओं के लिए निर्णयोंके मूल्यांकन में पथ प्रदर्शक है।प्रस्तुत पत्र में क्रियात्मक अनुसंधान के संक्षिप्तउद्गम परिचय, क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य, सोपान एवं शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास संवर्धन के सन्दर्भमेंक्रियात्मक अनुसंधान की महत्ता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिंदु - क्रियात्मक अनुसंधान, व्यावसायिक विकास संवर्धन

वर्तमान युग में जहाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को उन्नत बनाने हेतु नवाचारी तकनीक व प्रविधियों का उद्गम हुआ है वही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया जटिल होती जा रही हैक्योंकि शिक्षण के दौरान शिक्षकों को अनेक शिक्षा से जुड़ी सैद्धांतिक व व्यवहारिक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है।आज के युग में शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गई है ।शिक्षा मानव को समाज के लिए उत्पादक ,उपयोगी तथा सुसंस्कृत सदस्य बनाकर महत्वपूर्ण योगदान देती है।अतःव्यक्ति, समाज व राष्ट्रकी बढ़ती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व शिक्षण प्रक्रिया को बनाए रखने तथा शिक्षकों को अपनी व्यावसायिक दक्षता के लिए निरंतर अनुसंधान की आवश्यकता है। शिक्षा जगतमें नवीन तथ्यों ,सत्य व सिद्धांतों की खोज हेतु मौलिक अनुसंधान किए जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ शिक्षा की तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु क्रियात्मक अनुसंधान अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ है। शिक्षा व्यवस्था में आ रहे नवीन परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ रहा है इस कारण कक्षाव विद्यालय में बढ़ती जटिलताओं के कारण अध्यापकों को नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शैक्षणिक समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास किया जाता हैसाथहीकक्षा व विद्यालय की कार्य- पद्धति में सुधार के साथ शिक्षक अपनी व्यवसाय कुशलताओं को और बेहतर बना सकता है।

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ एक वैज्ञानिक खोज से है जो शिक्षा के व्यावहारिक पहलुओं व तात्कालिक समाधान से संबंधित है इसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों ,विद्यालयों और शैक्षिक प्रशासकों की दिन प्रतिदिन की गतिविधियों में आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक खोज है। **स्टीफनएम. Lकोरे** के शब्दों में क्रियात्मक अनुसंधान एक ऐसा अध्ययन है जिसे कोई व्यक्ति अपने ही काम को अधिक अच्छे ढंग से करने के लिए करता है यथा एक शिक्षक का अपने शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से तथा विद्यालय प्रशासक का अपने प्रशासन को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए किया गया अध्ययनहै।

क्रियात्मक अनुसंधान केक्रमिक विकास पर चर्चा की जाए तो क्रियात्मक अनुसंधान के संप्रत्ययको 'आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धांत'(ModernHuman Organization Theory) कीउत्पत्ति माना जा सकता है।इस सिद्धांत की मुख्य अवधारणा यह है कि व्यवस्था के कार्यकर्ताओं में कार्य कुशलता के साथ-साथ समस्या का समाधान प्राप्त करने कीक्षमता तथा अपने निश्चित मूल्य भी होते हैं इसलिए कार्यकर्ता को उसके कार्य में आने वाली समस्याओं के समाधान का अवसर दिया जाना चाहिए ।1879 में मनोविज्ञान प्रयोगशाला के निर्माण फलस्वरुप शिक्षा में अनुसंधान के लिए कदम उठाए गए।सन् 1920-30 मेंशैक्षिकअनुसंधान का बाहुल्यहो गया। 1926 में**बकिंघम** ने अपने ग्रंथ 'रिसर्च फॉर टीचर्स'(Research for Teachers)में शिक्षकों के लिए अनुसंधान की बात कही। तदुपरांत 1933 में**कॉलियर** मे सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने पर बल देते हुए क्रियात्मक अनुसंधान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया। तत्पश्चात**कर्टलेविन**नेमानवीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कतिपय अनुसंधान किए जिसे क्रियात्मक अनुसंधान का आधुनिक स्वरूप कहा जा सकता है शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान काश्रेय**स्टीफनएम. कोर**(1953) को जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा

स्टीफनएम. कोरे के अनुसार"क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अन्वेषकअपनी समस्याओं को निर्देशित करने के लिए, ठीक करने के लिए तथा उनके निर्णय एवं कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन करताहै।"

सारा ब्लैकवैल के अनुसार "क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालयों की समस्याओं से संबंधित विद्यालय कार्यकर्ताओं द्वारा विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार लाने के लिए किया गया अनुसंधान है।"

क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र

क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्रों को निम्न शीर्षोके अंतर्गत रखा जा सकता है-

- ❖ शिक्षण अधिगम संबंधी समस्याएं
- ❖ व्यवहार संबंधी समस्याएं
- ❖ पाठ्य सहगामी क्रियाएं
- ❖ प्रशासन और व्यवस्था संबंधी
- ❖ मूल्यांकन

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य

क्रियात्मक अनुसंधान उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है ।क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य सिद्धांत निरूपण या सिद्धांत परीक्षण न होकर किसी तात्कालिक परिस्थिति विशेष में समस्या का समाधान खोजना है ।शैक्षिक परिदृश्य में निम्नांकित बिंदुओं के आधार पर क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य को स्पष्टकिया जा सकता है-

- ❖ विद्यालय के क्रियाकलापों व दैनिक गतिविधियों से संबंधित समस्याओं का समाधान करना।
- ❖ विद्यालय के परंपरागत रूढ़िवादिता तथा यांत्रिक वातावरण को समाप्त करना।
- ❖ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने व छात्रों की योग्यताएवंउपलब्धि को बढ़ाने के लिए नवीन मार्ग की खोज करना।
- ❖ विद्यालय से जुड़े कार्यकर्ताओं,शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबंधक तथा निरीक्षकों में खोज की प्रवृत्ति को उत्पन्न कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।

- ❖ समस्याओं के बोध एवं उनके निराकरण के प्रति विद्यार्थियों तथा अध्यापकों में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण विकसित करना।
- ❖ शिक्षण विधियों,पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों, परीक्षा प्रणाली, अनुशासन, पाठ्य सहायक क्रियाएं, उपस्थिति एवं अपराध वृत्तिसे संबंधित शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सहायता करना।
- ❖ शिक्षण के लिए शिक्षकों में योग्य कौशलों का विकास करना।
- ❖ प्रशासक और अन्य उच्च पदासीन विद्यालय कार्यकर्ताओं में श्रेष्ठकौशलों का विकास करना ताकि वे विद्यालय परिस्थितियों में सुधार कर उन्हें अधिगम अनुकूल बनासकें।
- ❖ छात्रों और शिक्षकोंमेंसमुचितलोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना।
- ❖ छात्रों के निष्पादन स्तर व आकांक्षा स्तर को बढ़ाना

शिक्षा के क्षेत्र में कोहेन एंड मैनियननेशिक्षा, शिक्षण तथा अधिगम के संदर्भ में क्रियात्मक अनुसंधान के अधोलिखित पांच उद्देश्यों का उल्लेख किया है जो भारतीयशैक्षिकपरिस्थितियों में प्रासंगिक प्रतीत होती है–

1.यह विशिष्ट परिस्थितियों में निदान की गई समस्याओं को दूर करने का या किन्हीं दी गई परिस्थितियों में किसी विशेष तरह से सुधार करने का साधन है।

2.यह सेवारत शिक्षकों में व पूर्व-सेवारत प्रशिक्षणरतछात्राध्यापकों के प्रशिक्षण का एक साधन है , जिससे शिक्षक को नवीन कौशलों और विधियों से दक्ष करना, उसकी विश्लेषणात्मक शक्तियों को तेज करना और उसकी आत्म- जागरुकता को बढ़ाना।

3..यह प्रचलित प्रणाली में शिक्षण और अधिगम के लिए अतिरिक्त या नवीन दृष्टिकोणोंको समाविष्ट करने का माध्यम है जो सामान्य रूप नवाचार और परिवर्तन को रोकता है।

4. यह अभ्यास करने वाले शिक्षक और शैक्षणिक शोधकर्ता के बीच सामान्य रूप से कमजोर संप्रेषण में सुधार करने और पारंपरिक अनुसंधान की विफलता को दूर करने का साधन है।

5. वास्तविक रूप में कठोरसम्यकवैज्ञानिक अनुसंधान की कमी होते हुए भी यह व्यक्तिपरक एवं प्रभावादी दृष्टिकोण के द्वारा कक्षागत परिस्थितियों को हल करने हेतु बेहतर विकल्प प्रदान करने का साधन है।

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान

क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया निम्नलिखितछ: सोपानोंमें पूरी की जाती है-

- ❖ समस्या को पहचानना
- ❖ समस्या का परिभाषीकरणएवं सीमांकन
- ❖ कारणों का विश्लेषण
- ❖ क्रियात्मक परिकल्पनाओं का निर्माण
- ❖ क्रियात्मक परिकल्पना के क्रियान्वयन हेतु कार्ययोजना बनाना अथवा अभिकल्प तैयार करना
- ❖ परिणामों का मूल्यांकन

एंडरसन के अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान की प्रणाली में सातसोपानों का होना अनिवार्य है-

- ❖ समस्या का ज्ञान
- ❖ कार्य के प्रति प्रस्तावों पर विचार विमर्श
- ❖ योजना का चयन वउपकल्पना का निर्माण

- ❖ तथ्यों संग्रह करने की विधियों का निर्माण
- ❖ योजना का कार्यान्वयन एवं प्रमाण का संकलन
- ❖ तथ्यों पर आधारित निष्कर्ष
- ❖ दूसरों को परिणामों की सूचना

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास संवर्धन मैं क्रियात्मक अनुसंधान

व्यवसायिक विकास और क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षण व्यवसाय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक के लिए पर्यवेक्षकों , प्रशासकों व उच्च पदासीनकार्यकर्ताओं द्वारा हमेशा ही सार्थक व प्रभावी व्यवसायिक विकास की मांग की जाती है। अपने शिक्षण कौशलोंएवं व्यवहारों में संवर्धन हेतु शिक्षकों को आमतौर पर सेवाकालीन बैठकों,कार्यशालाओंएवंसम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है परंतु कई बार निराशा अधिक समय लेने वाली होती है ।अतः शिक्षकों को अपने को व्यवसायिक रूप से दक्ष बनाना आवश्यक है जिसके लिए उसे ऐसे साधन की आवश्यकता है,जो उसकी दक्षता पर लंबे समय तक प्रभाव डाल सके। शिक्षण अधिगम के दौरान कक्षा व विद्यालय में ऐसी समस्याएं उत्पन्न होती है जिन्हें तत्कालीन समाधान की आवश्यकता होती है ।इस प्रकार परिस्थितिजन्य तत्काल उत्पन्न समस्या का हल खोजने के लिएक्रियात्मक अनुसंधान एक सशक्त साधन है। एक कार्य योजना विशेष रूप से उस स्थिति में महत्वपूर्ण होती है जब स्थितियां या चीजें अपेक्षित नहीं होती या रणनीतियोंमें बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए क्रियात्मक शोध यह सुनिश्चित करता है कि जो भी स्थिति पाई जाती है उसका व्यवहारिक समाधान हो। क्रियात्मक शोध शिक्षकों में क्षमता उत्पन्न करता है कि वह अपनी समस्या का व्यवहारिक समाधान खोज सकें साथ ही वह अपनी समस्या की गहराई को समझ सके।

शिक्षकों के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का महत्व

- ❖ क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करता है।
- ❖ शिक्षक छात्र की रुचियों, आवश्यकताओं एवं क्षमताओं का अध्ययन करके शिक्षण पद्धति को अपना सकते हैं जिसके द्वारा शिक्षण दिलचस्प हो सकता है और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सकता है।
- ❖ क्रियात्मक अनुसंधान विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर बढ़ानेमें शिक्षकों की सहायता कर सकता है।
- ❖ विद्यालय को विद्यार्थियों के उचित कार्यक्रम आयोजित करने में सक्षम बनाता है।
- ❖ शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम विकास में सहायक हो सकता है।
- ❖ अनुशासनहीनतासेजुडी समस्याओं को सरलतापूर्वक हल कर सकता है।
- ❖ खइसके द्वारा शिक्षक कक्षा के पारंपरिक और यात्रिक वातावरण को समाप्त करके लोकतांत्रिक मूल्यों की समस्या को संरक्षित कर सकता है।
- ❖ क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक के लिए अपराध और पिछड़ेपन की समस्याओं को हल करने में सहायक हो सकता है।
- ❖ विश्रान्त संकाय की प्रेरणा और प्रभावकारिता में वृद्धि कर सकता है।
- ❖ एक मानक आधारित प्रणाली मैं सफलता प्राप्त कर सकता है।
- ❖ यह शिक्षक में भी विमर्शी चिंतन और उच्च स्तरीय शिक्षण स्तर का विकास करता सकता है।
- ❖ यह शिक्षक के अथक प्रयास एवं छात्रउपलब्धिके मध्य एक पुल का काम करता है।
- ❖ शिक्षक अपनी कार्यप्रणाली व कार्य-पद्धतियों का मूल्यांकन करउन्हे दूर कर सकता है।

निष्कर्षतःसमकालीनस्थितिमें शिक्षक के लिए क्रियात्मक अनुसंधान की उपादेयता को जानते हुए हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार की समस्याओं का सामना शिक्षक,प्रबंधक, पर्यवेक्षक एवं प्रशासक कर रहे हैं उससे निजात पाने एवं स्थितिजन्य सुधार हेतु क्रियात्मक अनुसंधान महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि क्रियात्मक अनुसंधान केवल समस्या समाधान व परिस्थितियों में सुधार ही नहीं करता बल्कि शिक्षकों में यथोचित समयानुकूल व्यावसायिकगुणों कास्फुरणभी करता है। नैदानिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ है। यह शिक्षक में लोकतांत्रिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण ,एक अच्छे शोधकर्ताएवं आत्म मूल्यांकन कर्ता आदि गुणों का विकास करते हुए उसके व्यावसायिक विकास में संवर्धन करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2015), शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
2. अग्रवाल, जे.सी. (2013), शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंधन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
3. पाण्डेय, के.पी. (2008),शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. सिंह, देवेन्द्र (2014), क्रियात्मक अनुसंधान, जगदंबा पब्लिशिंगकंपनी, दरियागंज, नई दिल्ली
5. भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2014),विद्यालयीयशिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान , आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली